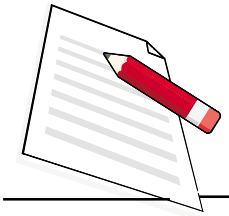

टिप्पणी

38

संचार माध्यम की भाषा

अब तक आपने पढ़ा कि संचार हमारे जीवन की बहुत आवश्यक और उपयोगी प्रक्रिया है। अख़बार, रेडियो और टेलीविज़न हमें नई-नई जानकारी देने के साथ-साथ हमारे जीवन में परिवर्तन लाते हैं। आपने यह भी जाना कि समाचार किसे कहते हैं और समाचार कहाँ से प्राप्त होते हैं। एक स्थान पर हमने आपको बताया था कि समूचा संचार-कार्य भाषा के ज़रिए होता है। इस प्रकार भाषा संचार माध्यमों का प्राण है। भाषा के बिना संचार माध्यम निर्जीव है। इस पाठ में हम यह जान सकेंगे कि संचार माध्यमों की भाषा का स्वरूप कैसा होना चाहिए। साथ ही आपको बताया जाएगा कि जनसंचार माध्यमों की भाषा का विकास किस प्रकार होता है। समाचारपत्रों और प्रसारण माध्यमों की भाषा में अंतर भी स्पष्ट रूप से बताया जाएगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- समाचारपत्रों की भाषा का विश्लेषण कर सकेंगे;
- भाषा के निर्माण और विकास की प्रक्रिया को समझा सकेंगे;
- यह बता सकेंगे कि अनुवाद करते समय किन बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है;
- रेडियो और दूरदर्शन की भाषा की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- समाचारपत्रों तथा प्रसारण माध्यमों की भाषा की तुलना कर सकेंगे;
- लिखित तथा मौखिक माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी भाषा में अंतर बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

हिंदी के दो अख़बारों में से पाँच समाचार काटकर अलग कागज पर चिपकाइए और समाचारों को पढ़कर उनकी भाषा पर चार बिंदु यहाँ लिखिए।

1......................2......................3......................4......................

टिप्पणी

38.1 भाषा के प्रकार

जिस तरह बिना हवा के हम जी नहीं सकते उसी तरह साधारणतः बिना भाषा के संचार नहीं किया जा सकता। संचार का मुख्य साधन भाषा है। बिना भाषा के संचार निर्जीव है। समाचारपत्रों के बारे में तो यह बात एकदम सही है, क्योंकि भाषा में ही तो अख़बार छपते हैं। रेडियो और दूरदर्शन में भी भाषा का प्रयोग किया जाता है, जिसे वाचिक भाषा कहते हैं। परंतु क्या आप यह जानते हैं कि प्रसारण से पहले लिखित रूप में ही सामग्री को तैयार किया जाता है।

मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि समाचारपत्रों की भाषा आम पाठक की भाषा होती है। जब भी किसी अख़बार के प्रकाशन की योजना बनती है तो सबसे पहले इस बात पर विचार किया जाता है कि उसके पाठक वर्ग में किस तरह के लोग होंगे। उदाहरण के लिए हिंदी के प्रमुख अख़बारों में से **नवभारत टाइम्स** के पाठक **पंजाब केसरी** या **जनसत्ता** के पाठकों से अलग हैं। अगर आप ध्यान से देखेंगे तो **नवभारत टाइम्स** और **जनसत्ता** की भाषा यानी शब्दावली तथा वाक्य रचना में अंतर होता है। इसी तरह किसी छोटे कस्बे से निकलने वाले अख़बार तथा राजधानी से निकलने वाले समाचारपत्र की भाषा में कुछ अंतर रहता है। मज़दूरों के लिए छपने वाली किसी पत्रिका और विश्वविद्यालय के अध्यापकों के लिए छपने वाली पत्रिका का भाषा-स्तर निश्चय ही अलग-अलग होगा।

जिस तरह पाठक वर्ग बदलने पर भाषा का स्वरूप बदल जाता है, उसी तरह विषय के अनुसार भाषा में परिवर्तन आ जाता है। विज्ञान से संबंधित पत्रिका और व्यापार से संबंधित पत्र की भाषा में अंतर अवश्य दिखाई देगा। कृषि के बारे में छपने वाले अख़बार में जिस तरह के शब्द, वाक्य, कहावतें या मुहावरे इस्तेमाल किए जाते हैं, वैसे ही शब्द या मुहावरे संचार संबंधी पत्रिका में प्रयोग नहीं किए जाते। यही क्यों, एक ही समाचारपत्र या पत्रिका में अलग-अलग विषयों पर लिखे गए लेख अथवा समाचार की भाषा में अंतर लाना पड़ता है। उदाहरण के लिए खेलों के समाचारों को पढ़ते समय आप ऐसी भाषा की उम्मीद करते हैं, जिसमें फड़कते हुए तथा गति वाले शब्द और वाक्य हों, जबकि संगीत अथवा साहित्य के समाचारों व लेखों की भाषा अलग हो जाती है। इसी तरह आर्थिक समाचारों और लेखों में नए तरह के शब्द प्रयोग किए जाते हैं जैसे कि सोना लुढ़का, चाँदी चमकी, गेहूँ में उछाल आदि।

38.2 भाषा का विकास

भाषा का विकास लगातार होता रहता है। जो भाषा जितनी ज़्यादा इस्तेमाल होती है, उसका उतना ही विस्तार और विकास होता है। आप जानते होंगे कि हमारे यहाँ अंग्रेजों के आने से पहले सरकारी, दरबारी और अदालती कामकाज फ़ारसी और फिर उर्दू में होता था। ब्रिटिश शासन में भी भारत में अंग्रेज़ी के साथ-साथ उर्दू में काम होता रहा। इसका नतीजा यह हुआ कि सारी शब्दावली फ़ारसी में और फिर अंग्रेज़ी में विकसित हुई। किंतु जब स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और

टिप्पणी

हिंदी में ही केंद्र तथा कुछ राज्यों में कामकाज होने लगा तो हिंदी में नए-नए शब्दों का विकास होने लगा। हमने प्रारंभ में ही लोकसभा, राज्यसभा, विधान परिषद, विधानसभा, सचिवालय, मंत्रिमंडल, सरकार, आयोग, प्रशासन जैसे शब्द बना लिए और अब सभी भारतीय भाषाओं में यही शब्द पारिभाषिक शब्द बन चुके हैं। बाद में जैसे-जैसे नए विषय तथा नए तरह का कामकाज सामने आया, नई शब्दावली और वाक्य रचना भी विकसित होने लगी।

अधिकतम नवीनतम जानकारी प्राप्त करना ही समाचार है।

समाचारपत्रों की भाषा भी इसी तरह विकसित होती रहती है। ध्यान देने की बात यह है कि संचार में हमारा लक्ष्य भाषा को सँवारना नहीं, बल्कि अपनी बात को लोगों तक पहुँचाना होता है। यह सही है कि भाषा जितनी सुगठित और मँजी हुई होगी, हमारी बात का असर भी उतना ही गहरा होगा। लेकिन भाषा को हमें माध्यम और साधन मानकर ही चलना चाहिए। साहित्य और पत्रकारिता में यही अंतर है। कई बार साहित्य की भाँति पत्रकारिता में भी भाषा को चमत्कारिक बनाने के लोभ से उसे दुरूह और बोझिल बना दिया जाता है।

समाचारपत्रों की भाषा का मूल्यांकन करते हुए इस तथ्य की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि अख़बार बहुत जल्दी में छापे जाते हैं और उनके लिए समाचार आदि लिखने का काम भी अक्सर शीघ्रता से होता है। फिर भी भाषा के महत्त्व को मूल सामग्री से कम नहीं किया जा सकता। अगर भाषा क्लिष्ट या ढीली-ढाली है तो संदेश भी बेकार हो जाता है। पाठक को पढ़ने में रुचि न रहे या बात उसके पल्ले ही न पड़े तो सारी मेहनत ही व्यर्थ चली जाएगी। समाचारपत्रों के समान भाषा के विकास में रेडियो और दूरदर्शन का योगदान भी है।

पाठगत प्रश्न 38.1

1. उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

   (क) बिना भाषा के संचार माध्यम .... है।

   (ख) विज्ञान से संबंधित रचना और व्यापार से संबंधित रचना में .... अवश्य दिखाई देगा।

   (ग) जो भाषा जितनी .... इस्तेमाल होती है, उसका उतना ही अधिक ....होता है।

   (घ) पत्रकारिता की भाषा साहित्य की भाषा से ....होती है।

2. वाचिक भाषा किसे कहते हैं? इसे किस रूप में तैयार किया जाता है?

38.3 समाचारपत्रों की भाषा

1. वर्तनी की समस्या

अभी तक हमने हिंदी समाचारपत्रों की भाषा के विभिन्न स्वरूपों को देखा और उनके गुण-दोषों की चर्चा की। आइए, अब हम एक ऐसी बात पर विचार करें, जो सबसे अधिक खटकने वाली है, यह है समाचारपत्रों की भाषा और वर्तनी में एकरूपता का अभाव। यह दोष हिंदी के लगभग सभी समाचारपत्रों में पाया जाता है। इसके मुख्य पहलू इस प्रकार हैं :

- हिंदी भाषी क्षेत्रों में अलग-अलग स्थानों पर हिंदी के अलग-अलग रूप पाए जाते हैं।
- हिंदी भाषी क्षेत्र में अनेक बोलियाँ हैं, जिनमें अनेक असमानताएँ हैं।
- अधिकांश हिंदी भाषी पढ़ने-लिखने में तो हिंदी के मानक रूप का प्रयोग करते हैं किंतु अपने परिवार के सदस्यों, सगे-संबंधियों और मित्रों से अपनी स्थानीय बोली में बात करते हैं।
- हिंदी भाषा का मानक रूप तो पूरे हिंदी क्षेत्र में एक-सा है लेकिन हिंदी की बोलियों—ब्रज, अवधी, भोजपुरी आदि में अंतर है।

इस प्रकार लगभग प्रत्येक हिंदी भाषी अनिवार्य रूप से द्विभाषी है, अतः वह अपनी प्रादेशिक भाषा, शब्दावली, प्रयोगों और मुहावरों से प्रभावित होता रहता है। यदि हम विभिन्न हिंदी क्षेत्रों से प्रकाशित होने वाले अख़बारों की भाषा की तुलना करें, तो यह अंतर स्पष्ट रूप से सामने आ जाएगा।

हिंदी अख़बारों की भाषा में एकरूपता का अभाव होने का कारण यह भी है कि हिंदी के अनेक शब्दों की वर्तनी के विषय में अभी तक एकरूपता कायम नहीं की जा सकी है। इसका कारण यह है कि संस्कृत व्याकरण से हिंदी के शब्दों की वर्तनी को नियमित करना संस्कृत न जानने वाले हिंदी प्रेमियों को स्वीकार्य नहीं है। उच्चारण के आधार पर वर्तनी को स्वीकार करने में भी अनेक बाधाएँ हैं, क्योंकि हिंदी क्षेत्र इतना बड़ा है कि इसके विभिन्न भागों में शब्दों के उच्चारण में भी बहुत असमानताएँ हैं। वर्तनी में एकरूपता लाने की दिशा में शासकीय संस्थाओं द्वारा किए गए प्रयासों के बाद भी अपेक्षित परिणाम नहीं निकल सका है। आज भी विभिन्न हिंदी राज्यों की वर्तनी में अंतर मिलता है। इसलिए इस समस्या का हल समाचार पत्रों को अपने स्तर पर करना चाहिए।

हिंदी समाचारपत्रों में अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं के व्यक्तिवाचक नामों की वर्तनी में हास्यास्पद भेद पाए जाते हैं। हिंदी में जैसा बोला जाता है, प्रायः वैसा ही लिखा जाता है; जबकि अन्य भाषा के शब्दों के विषय में यह तथ्य सही नहीं है, अतः उनके उच्चरित और लिखित रूप दोनों पर विचार करना आवश्यक है। हिंदी समाचार पत्रों को बहुत कुछ मूल सामग्री अंग्रेजी में प्राप्त होती है, जो इस प्रकार की वर्तनीगत अशुद्धि का मूल कारण है। इस दिशा में एक उल्लेखनीय बात यह है कि अलग-अलग हिंदी क्षेत्रों के हिंदी अख़बारों में वर्तनी का अंतर तो मिलता ही है, साथ ही एक ही

अख़बार में एक ही शब्द की अलग-अलग वर्तनी भी मिलती है। वर्तनी का यह अंतर हिंदी समाचारपत्रों की प्रतिष्ठा में बड़ा बाधक है, अतः इसे दूर करना हिंदी समाचारपत्रों की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए आवश्यक है। कंप्यूटर युग में तेजी से 'स्पेल चेकर' (वर्तनी जाँचक) विकसित हो रहे हैं।

2. शब्द और वाक्य प्रयोग

हिंदी समाचारपत्रों को सामान्य साक्षर लोगों से लेकर विद्वान तथा भाषा-विशारद तक सभी स्तरों के पाठक पढ़ते हैं। इसलिए भाषा की सरलता के साथ-साथ उसकी स्तरीयता का भी ध्यान रखना चाहिए। जहाँ तक शब्दों का प्रश्न है, समाचारपत्रों में हिंदी पर्याय के साथ-साथ तकनीकी शब्दों के अंग्रेजी रूप भी ज्यों के त्यों लिए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए स्टेशन, टेलीफ़ोन, बस, कार, पेन, स्कूल, कॉलेज, अफसर, फ्रिज, टेलीविज़न, रेडियो, साइकिल, मशीन, बटन आदि सैकड़ों ऐसे शब्द हैं, जो हमारी भाषा के अंग बन गए हैं। इसी तरह नई-नई खोजें होती हैं और नए तत्त्व, यंत्र या उपकरण सामने आते हैं, तो उनके नाम प्रायः उसी रूप में अपना लिए जाते हैं और यह उचित भी है। उदाहरण के लिए कंप्यूटर, यूरिया, क्लोरीन, रेडियम, इंटरनेट आदि।

परंतु इस तरह के शब्दों का अधिक प्रयोग अनुचित है। जो शब्द हमारी अपनी भाषा में मौजूद हैं, उनके भी अंग्रेज़ी पर्याय प्रयोग किए जाने लगे तो भाषा का स्वरूप बिगड़ जाएगा। कुछ अख़बार गोलीबारी के लिए 'फायरिंग', राज्यपाल के लिए 'गवर्नर' निदेशक के लिए 'डायरेक्टर', मंत्रिमंडल के लिए 'कैबिनेट',जाँच के लिए 'एन्क्वायरी' आदि शब्दों के प्रयोग धड़ल्ले से कर रहे हैं। यह सर्वथा अनुचित है। दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनाने में संकोच न करना अपने आप में गुण है। परंतु आँख मूँद कर हर शब्द का अनावश्यक रूप से प्रयोग करना अवगुण है। इससे भाषा समृद्ध बनने की बजाय शिथिल बनती जाती है। कठिन और बोझिल शब्दों का प्रयोग यदि भाषा की सुबोधता को कम करता है, तो हल्के और विदेशी लगने वाले शब्दों का प्रयोग भाषा की गुणवत्ता को कम करता है।

यही बात वाक्यों के बारे में कही जा सकती है। समाचारपत्रों में जहाँ एक ओर शिथिल वाक्य-रचनाएँ देखने को मिलती हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी जटिल वाक्य-रचनाएँ भी देखी जा सकती हैं, जो साधारण पाठकों की समझ में नहीं आतीं। जटिल वाक्य-संरचना प्रायः संपादकीय लेखों में देखने को मिलती है। आइए, हम यहाँ इस प्रकार के कुछ उदाहरण देखें। ये उदाहरण दिल्ली के एक प्रमुख अख़बार से लिए गए हैं :

1. *"इतिहास में जो छलावेदार गलियारे हैं, उनमें अनंतता तक दर्पण ही दर्पण लगे हुए हैं। उन्हीं में सब जानते बूझते क्या भटकता होगा?"*

यह वाक्य संपादकीय लेख का है। इसमें लेखक ने ऐसी घुमावदार भाषा का प्रयोग किया है, जिसे विरले पाठक ही समझ सकते हैं। जबकि अख़बारों में इस प्रकार की भाषा लिखी जानी चाहिए, जिसे ज़्यादातर पाठक समझ सकें, क्योंकि संपादकीय लेख

के माध्यम से संपादक अपनी बात सर्वसाधारण तक पहुँचाना चाहता है। ये सभी जानते हैं कि अख़बारों के पाठकों का बौद्धिक स्तर भिन्न-भिन्न होता है और उसका लक्ष्य कम योग्यता वाला पाठक होना चाहिए।

2. *''कुछ अत्यंत वयस्क राष्ट्रों में तो ऐसे विशेष पर्व पर कोई अतिरिक्त उत्साह दिखता ही नहीं–उसे एक बचपना समझा जाता है–क्योंकि स्वतंत्रता या मुक्ति सारी जनता के संपूर्ण दर्जे और अवसर की बराबरी, अहैतिक अन्याय से मुक्ति, भय और अभाव के भय से आजादी के रूप में इतनी रच-बस गई है कि वह एक निरंतर स्वतंत्रता दिवस के रूप में हमेशा विद्यमान रहती है।''*

यह अंश 15 अगस्त के संपादकीय लेख का है। सरल शब्दों से युक्त होते हुए भी यह वाक्य इतना बड़ा है कि पाठक शायद ही इसे समझ सकें। साधारण पाठक तो इसकी भाषा में ही उलझ कर रह जाएँगे। अख़बार में इतने बड़े और जटिल वाक्य नहीं लिखे जाने चाहिए, जिन्हें समझने के लिए पाठक को अपने दिमाग पर बहुत जोर डालना पड़े। कोई भी पाठक भाषा सीखने के लिए अख़बार नहीं पढ़ता बल्कि ख़बरें जानने के लिए पढ़ता है। अतः अख़बारों में सरल सुबोध भाषा का ही प्रयोग होना चाहिए।

3. भाषा का आदर्श रूप

हम पहले बता चुके हैं कि समाचारपत्रों का मूल उद्देश्य भाषा का विकास नहीं है, किंतु भाषा का जो स्वरूप समाचारपत्रों के पठन-पाठन और वाचन द्वारा समाज के हर वर्ग तक पहुँचता है, उसका भाषा के निर्माण में प्रमुख स्थान रहता है। समाचारपत्र एक ऐसा समर्थ माध्यम है, जिससे किसी भाषा के प्रचार और लोकरुचि के निर्माण में बहुत सहायता मिलती है। आज बहुत से विद्वानों की तो यह मान्यता है कि समाचारपत्र राष्ट्रभाषा के लिखित स्वरूप का मानकीकरण करते हैं। अतः हिंदी के समाचारपत्रों का यह दायित्व है कि वे भाषा के प्रयोग में लापरवाही न बरतें। वे इस प्रकार की सरल, सुबोध और शुद्ध भाषा का प्रयोग करें, जो हिंदी को एक आदर्श रूप प्रदान कर सके।

सामान्यतः हिंदी के समाचारपत्रों का पाठक जब किसी समाचार या घटना के विषय में चर्चा करता है, तो वह उसी भाषा का प्रयोग करता है, जो उसे समाचारपत्र से मिलती है। संचार-साधनों के विस्तार के कारण अब ग्रामीण क्षेत्र भी आधुनिक प्रगति से जुड़ गए हैं। अब ग्रामीण जनता भी समाचारपत्रों को पढ़ती है और उनके द्वारा दिए गए समाचारों और विचारों पर चर्चा करती है। दैनिक समाचारपत्रों की भाषा का नवीनीकरण हर 24 घंटे के बाद होता रहता है, अतः समाचारपत्रों की भाषा का प्रभाव स्थायी हो जाता है। समाचारपत्र अपनी भाषा की इस शक्ति से हिंदी के मानक स्वरूप की स्थापना कर सकते हैं। किंतु जैसा कि ऊपर आपने पढ़ा आज भी हिंदी समाचारपत्रों में भाषा के प्रति सजगता का अभाव पाया जाता है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी समाचारपत्र भाषा के प्रयोग में पूरी तरह सजग रहें और अपने समाचारों में हिंदी के ऐसे मानक रूप का प्रयोग करें, जो समाज में हर वर्ग के लिए आदर्श बन सके।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 38.2

उचित शब्द भर कर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिएः

1. समाचारपत्रों में भाषा की .... के साथ-साथ स्तरीयता का भी ध्यान रखना चाहिए।
2. दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनाना अपने आप में ....है, परंतु आँख मूँद कर विदेशी शब्दों का इस्तेमाल करना ....है।
3. लोग भाषा ....के लिए नहीं, बल्कि नई जानकारी हासिल करने के लिए अख़बार पढ़ते हैं।
4. एकरूपता का ....हिंदी भाषा का एक मुख्य दोष है, जो समाचारपत्रों के ....से दूर किया जा सकता है।
5. ....की भिन्नता और त्रुटियों से हिंदी समाचारपत्रों की प्रतिष्ठा कम होती है।

38.4 प्रसारण माध्यमों की भाषा

रेडियो और टेलीविज़न को हमारे देश में क्रमशः आकाशवाणी तथा दूरदर्शन कहा जाता है। इन प्रसारण माध्यमों के द्वारा मनोरंजक, ज्ञानवर्धक तथा सूचनापरक आदि सब तरह के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। परंतु यहाँ हम मुख्य रूप से समाचारों तथा समसामयिक कार्यक्रमों की भाषा का विवेचन करेंगे। ये कार्यक्रम सबसे अधिक लोगों द्वारा सुने-देखे जाते हैं और पत्रकारिता तथा संचार की श्रेणी में आते हैं। समाचारपत्रों तथा प्रसारण माध्यमों के समाचार बुलेटिनों और समसामयिक कार्यक्रमों की भाषा बुनियादी तौर पर एक जैसी होती है, क्योंकि दोनों तरह के माध्यमों का वास्ता आम लोगों से पड़ता है। पाठकों और श्रोताओं/दर्शकों में सामान्य रूप से साधारण समझ वाले व्यक्ति से लेकर विद्वान तक होते हैं। फिर भी दोनों में अंतर रहता है, क्योंकि इन माध्यमों की प्रवृत्ति और स्वरूप एक-दूसरे से काफी भिन्न हैं। अख़बार पढ़ा जाता है, रेडियो सुना जाता है और दूरदर्शन देखा जाता है।

1. रेडियो की भाषा

रेडियो प्रसारणों में भाषा का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इसे अनपढ़ तथा एकदम निरक्षर लोग भी सुनते हैं। सच तो यह है कि हमारे देश की स्थितियों में संचार माध्यम के रूप में रेडियो की उपयोगिता सबसे ज़्यादा है। इसलिए रेडियो के समाचार तथा अन्य कार्यक्रमों को तैयार करने वालों की ज़िम्मेदारी काफी बढ़ जाती है।

चूँकि रेडियो केवल सुना जाता है, इसलिए इसे सुनते-सुनते ध्यान भटक जाने की संभावना सबसे अधिक होती है। कभी-कभी रेडियो सुनते हुए हम कोई और काम भी करने लग जाते हैं। कुछ विद्यार्थी तो रेडियो सुनते-सुनते पढ़ाई भी करते रहते हैं।

हल्के-फुल्के गाने या संगीत सुनते हुए ही ऐसा किया जा सकता है। यही कारण है कि रेडियो के कार्यक्रमों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि लोगों की रुचि उनमें बनी रहे। यदि भाषा जटिल और बोझिल होगी, तो कोई भी उसे ध्यान से नहीं सुनेगा। इसलिए प्रसारण की भाषा सरल और सब तरह के श्रोताओं को समझ में आने वाली होनी चाहिए। इसका सबसे प्रमुख कारण तो यह है कि सरल भाषा को सामान्य तथा विद्वान, निरक्षर तथा साक्षर और बच्चे तथा बड़े समान रूप से समझ लेते हैं। दूसरा कारण यह है कि प्रसारित संदेश मुद्रित सामग्री की भाँति नहीं होता, (जिसका कोई अंश समझ न आने पर पिछले पृष्ठ को पलट कर आप संदर्भ से जोड़ सकें अथवा कठिन शब्द का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश देख सकते हैं) और न ही श्रोता इस स्थिति में होता है कि किसी विद्वान या ज्ञानी व्यक्ति से परामर्श कर सके। एक बार जो वाक्य, उक्ति अथवा शब्द प्रसारित हो गया, वह हवा के झोंके की भाँति आगे निकल जाता है। इसलिए सफल प्रसारण की बुनियादी आवश्यकता है–भाषा की सरलता और सुबोधता।

अब प्रश्न यह है कि सरल भाषा का स्वरूप कैसा हो ? हिंदी को ही लें। एक मत यह है कि उर्दू के वक़्त, फ़िक्र, महसूस, मौजूद, कसम, अफ़सोस, खुशी, सदी, सिलसिला, कर्ज़, ख़ास, जोखि़म, तालीम, दावत, चीज़, पाक, फिजूल जैसे प्रचलित शब्दों का हिंदी के समाचारों, वार्ताओं तथा कार्यक्रमों में प्रयोग किया जाए। दूसरा पक्ष यह है कि हिंदी संस्कृत प्राकृत से विकसित है तथा अन्य भारतीय भाषाएँ भी संस्कृत के निकट हैं। अतः संस्कृतनिष्ठ शब्द जैसे उन्मूलन, मानचित्र, प्रोत्साहन, यथावश्यक, वस्तुस्थिति, सर्वेक्षण, प्रावधान, विश्वसनीय, परिस्थिति, शताब्दी, उपस्थित, क्रमशः, निमंत्रण, स्वतंत्रता, प्रकोष्ठ, परिवर्तन, सर्वाधिक, विश्लेषण तथा इसी प्रकार के शब्द प्रयोग किए जाएँ, जिससे वह सिर्फ हिंदी भाषी जनता ही नहीं, बल्कि सभी भाषा-भाषी हिंदी को समझ सकें।

वास्तव में दोनों पक्ष अपनी-अपनी जगह सही हैं। किंतु शब्दों का मापदंड है उनका अधिक से अधिक लोगों द्वारा बोला तथा समझा जाना और बोलचाल में प्रयुक्त किया जाना। इसलिए उर्दू के जो शब्द हिंदी में बोलचाल के अंग बन गए हैं, उनके प्रयोग करना यथेष्ट है तथा संस्कृत के जो शब्द लंबे समय ये प्रयोग में आ रहे हैं, उन्हें लेना हितकर है। उदाहरण के लिए 'प्रोत्साहन' और 'बढ़ावा', 'विशेष' और 'खास', 'भाग लिया' तथा 'हिस्सा लिया', 'उपस्थित' तथा 'हाज़िर', 'उत्तर' तथा 'जवाब', 'प्रयास' तथा 'कोशिश', प्रसन्नता' तथा 'खुशी' दोनों प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। मूल बात है शब्द के प्रसारणकर्ता से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे इस बात का ज्ञान हो कि कौन से शब्द सामान्य व्यक्ति द्वारा समझे जा सकते हैं।

यही कारण है कि आकाशवाणी में 'किंतु', 'अपितु', 'एवं', 'अन्यथा', 'यद्यपि', 'यदि', 'तथापि', की बजाय क्रमशः 'लेकिन', 'बल्कि', 'और', नहीं तो, 'हालाँकि', 'अगर', 'तो भी', आदि का प्रयोग अधिक होता है। इसी प्रकार 'उपरांत', 'पश्चात्', 'पूर्व', 'सम्मुख','पुनः', के स्थान पर 'बाद', 'के बाद', 'पहले', 'सामने', 'फिर', शब्दों का प्रयोग बेहतर माना जाता है। शब्दों का चयन करते समय यह भी ध्यान में रखा जाता है कि इन्हें बोलने के लिए जीभ को ज़्यादा कष्ट न उठाना पड़े। उदाहरण के लिए ''*श्रमिकों को विश्राम का अवसर सुलभ नहीं हुआ*'' वाक्य के स्थान पर ''*आसानी से मजदूरों को आराम करने*

टिप्पणी

का अवसर नहीं मिला'' बोला जा सकता है। इसी प्रकार *''उन्होंने इस बात पर अफसोस ज़ाहिर किया कि मुल्क की तरक्की रुक गई है''* को यों बोलना अधिक आसान होगा : *''उन्होंने इस बात पर अफसोस प्रकट किया कि देश की प्रगति रुक गई है।''*

2. दूरदर्शन की भाषा

आप पढ़ चुके हैं दूरदर्शन आज का सबसे अधिक प्रभावशली संचार माध्यम है। दूरदर्शन मुख्य रूप से मनोरंजन का साधन माना जाता है, जिसमें धारावाहिक, नाटक, फिल्में, चित्रहार, हास्य नाटिकाएँ, तथा और भी कई तरह के कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। इन सब कार्यक्रमों की भाषा की चर्चा हम नहीं करेंगे, हालाँकि इन कार्यक्रमों में भी भाषा का महत्त्व कम नहीं होता। किंतु इनमें भाषा गौण होती है और चित्र अथवा दृश्यों के अंश का महत्त्व अधिक होता है। जैसे कि समाचारपत्रों और रेडियो की भाषा के विवेचन में हमने समाचारों की भाषा पर अधिक बल दिया था, दूरदर्शन की भाषा पर विचार करते हुए भी समाचारों की भाषा पर ही मुख्यतया प्रकाश डाला जा रहा है।

जहाँ तक दूरदर्शन समाचारों के वाचन पक्ष या श्रव्य पक्ष का सवाल है, इन पर वे सभी बातें लागू होती हैं, जो हम रेडियो समाचारों के बारे में बता चुके हैं। दूरदर्शन समाचारों में भी शब्द, वाक्य रचना तथा अनुवाद के मामले में वे सभी सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं, जो रेडियो समाचारों का लेखन-संपादन करते हुए बरती जाती हैं। फिर भी दूरदर्शन समाचारों का लेखन, संपादन और प्रस्तुतीकरण रेडियो समाचारों से भिन्न हैं। दूरदर्शन के समाचार और उनके भाषा संबंधी कुछ मुख्य पहलू इस प्रकार हैं:

- दूरदर्शन के समाचारों में भाषा का प्रयोग अपेक्षाकृत कम और चित्रों तथा दृश्यों का उपयोग अधिक किया जाता है। इसलिए समाचार के साथ जो कुछ दिखाया जाता है, उसका वर्णन शब्दों में करना हमेशा ज़रूरी नहीं होता। उदाहरण के लिए गणतंत्र दिवस की परेड का समाचार देने के लिए जहाँ समाचारपत्रों तथा रेडियो समाचारों में यह लिखा जाता है कि ''वायुसेना के बैंड दस्ते ने हरे रंग की कलगी वाली पगड़ी पहनी हुई थी और कदम से कदम मिलाते हुए उन्होंने राष्ट्रपति को सलामी दी'' वहाँ दूरदर्शन समाचारों में इतना कहना काफी है, *''यह है वायुसेना का बैंड दस्ता''*, बाकी दर्शक देखकर जान लेंगे।
- किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य कार्यक्रम, पुरस्कार वितरण जैसे सामान्य ढंग के समाचारों का पूरा विवरण देने की बजाय यही बताना पर्याप्त रहता है कि यह कार्यक्रम किस अवसर पर आयोजित किया गया और किस की ओर से हुआ। बाकी कार्यक्रम के लिए इतना ही काफी है, *''पेश है कार्यक्रम की झलक''*। दूरदर्शन में दृश्यमूलक शब्दों जैसे कि झाँकी, झलक, तस्वीर आदि का अधिक प्रयोग होता है।
- चूँकि दर्शक समाचार वाचक या रिपोर्ट प्रस्तुत करने वाले को प्रत्यक्ष रूप से देख रहे होते हैं, इसलिए वाचक के चेहरे के हाव-भाव से भी समाचार का प्रभाव उन तक पहुँचता है। इससे भी शब्दों का महत्त्व कम हो जाता है और दर्शक चित्र, भाव तथा शब्द तीनों के योग से समाचार का अर्थ ग्रहण करते हैं।

- रेडियो की तरह दूरदर्शन को भी अनपढ़ तथा पढ़े-लिखे लोग समान रूप से देखते हैं, इसलिए इसके वाक्य छोटे, सरल, सीधे होने चाहिए तथा ऐसे शब्दों का चयन किया जाना चाहिए जो सुनने में मधुर लगें। भाषा में गतिमयता (रवानी), सहजता और सुबोधता होना बहुत ज़रूरी है। वाक्यों का वाचन करते समय अवरोध पैदा करने वाले शब्दों के स्थान पर प्रचलित सरल पर्यायवाची शब्द प्रयोग किए जा सकते हैं।

- आपने दूरदर्शन पर समाचार देखते हुए गौर किया होगा कि समाचार के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश कभी-कभी लिखकर भी दिखाए जाते हैं। यह लिखावट किसी समाचार के मुख्य पक्ष को उजागर करने के लिए या संख्या संबंधी पहलुओं को स्पष्ट करने के लिए टी.वी. के पर्दे पर दिखाई जाती है, जिससे उसका अधिक प्रभाव पड़े और सुनने के साथ-साथ पढ़ने से संख्याएँ पूरी तरह समझ में आ जाएँ। इन लिखावटों को कम-से-कम शब्दों में पेश किया जाता है, जिससे वे कम-से-कम समय में पढ़ी जा सकें और उन्हें जल्दी से बदला जा सके। बजट, आर्थिक नीति, कृषि नीति, उद्योग नीति में परिवर्तन तथा इसी तरह के समाचारों में, जिनमें संख्याएँ व आँकड़े दिए जाते हैं, इस तरह की लिखावट को आपने अक्सर देखा होगा। उदाहरण के लिए समाचार में यह बताया जाता है, *''बजट में कृषि के लिए' 13,000 करोड़ रुपए तथा 'उद्योग' के लिए 11,000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है।''* किंतु पर्दे पर इतना मात्र लिखा हुआ दिखाया जाएगा, *'बजट प्रावधान : कृषि : 13,000 करोड़ रुपए, उद्योग : 11,000 करोड़ रुपए'* इसी प्रकार पर्दे पर दाईं ओर ऊपर की ओर जहाँ दूरदर्शन का 'लोगो' दिखाया जाता है कभी-कभी लिखावट अंकित की जाती है। इस हिस्से को दूरदर्शन की शब्दावली में 'विंडो' कहते हैं इसी 'विंडो' में चित्र, मानचित्र, फोटो आदि भी दिखाए जाते हैं। यहाँ केवल समाचार का शीर्षक अंकित किया जाता है, जिससे दर्शकों को ध्यान रहे कि वे किस विषय का समाचार सुन रहे हैं। इस तरह की लिखावट में दो-तीन शब्द ही इस्तेमाल किए जाते हैं, जैसे कि 'लोकसभा समाचार', 'विदेश मंत्रियों की बैठक', 'आयात-निर्यात नीति' आदि।

दूरदर्शन कार्यक्रमों और समाचारों की भाषा पर अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग करने का आरोप लगाया जाता है। इसे ठीक करना आवश्यक है। नए तथा तकनीकी शब्दों का ज्यों का त्यों इस्तेमाल करना तो जरूरी हो सकता है परंतु जिन शब्दों के हिंदी पर्याय पूरी तरह प्रचलित हैं उनको बार-बार अंग्रेजी में सुनना दर्शकों को बुरा लगता है।

3. संचार माध्यमों की वाक्य संरचना

शब्द भाषा की मूल इकाई है, परंतु वाक्यों से पृथक् उनका कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए वाक्य ऐसे बोले जाएँ, जो सीधे श्रोता की समझ में आ जाएँ। उसे वाक्य का अर्थ निकालने के लिए बौद्धिक कसरत न करनी पड़े। वाक्य यदि जटिल होंगे तो सरल शब्दों की नियति भी कीचड़ में गिरे फूलों से अधिक नहीं होगी। इसके लिए सबसे बड़ी

आवश्यकता है वाक्यों का छोटा होना। लंबे वाक्यों में उलझा देने से श्रोता अर्थ का अनर्थ कर बैठेगा तथा प्रसारण का लक्ष्य ही विफल हो जाएगा। जिस बात को मुद्रित या लिखित माध्यम में एक वाक्य में कह कर चमत्कार उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है, उसे प्रसारण माध्यम में दो या तीन वाक्यों में कहा जाना चाहिए। इसका उदाहरण देखें : *''राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन ने आज चंडीगढ़ में पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में युवकों से समय की चुनौती का डटकर मुकाबला करने का आह्वान किया तथा लोगों को अलगाववादी शक्तियों से सावधान रहने की चेतावनी दी।''*

व्याकरण की दृष्टि से इस वाक्य में कोई त्रुटि नहीं है और न ही इसमें बहुत कठिन शब्दों का प्रयोग किया गया है। परंतु यह वाक्य प्रसारण के लिए ठीक नहीं है। आकाशवाणी का संपादक इस समाचार को इस प्रकार बनाएगा : *''राष्ट्रपति ने लोगों से कहा है कि वे अलगाववादी शक्तियों से सावधान रहें। श्री वेंकटरमन आज चंडीगढ़ में पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने युवकों से कहा कि वे समय की चुनौती का डटकर मुकाबला करें''*।

कई बार वाक्य छोटे तो होते हैं, किंतु उनकी संरचना इतनी जटिल होती है कि समझने के लिए मस्तिष्क पर दबाव डालना पड़ता है। एक बानगी प्रस्तुत है :

> *''डाक्टर मनमोहन सिंह के बजट ने उदारता के युग का सूत्रपात करके अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है, जो चार दशकों से बनी हुई उस स्थिति के विपरीत है, जिसकी निंदा समाजवाद के विरोधी ''परमिट कोटा राज'' कह कर करते रहे हैं।*

यह वाक्य बहुत बड़ा नहीं है, किंतु जटिल होने के कारण तत्काल समझ में नहीं आता। इसे सरल बनाने के लिए दो वाक्यों में तोड़ना हितकर है। हालाँकि कम समय में अधिक बात कहना प्रसारण का मूल सिद्धांत है किंतु अस्पष्ट तथा अबूझ बात कहना तो समय को ही व्यर्थ करना है। इसलिए भाषा को सरल बनाने के लिए यदि कुछ सैकिंड अधिक खर्च करने पड़ें तो भी संकोच नहीं करना चाहिए। इस वाक्य को रेडियो वार्ताकार यों कहेगा :

> *''डाक्टर मनमोहन सिंह के बजट ने अर्थव्यवस्था में उदारता के युग का सूत्रपात किया है। यह नई दिशा पिछले चार दशकों से चले आ रहे ''परमिट कोटा राज'' के विपरीत है।*

आकाशवाणी और दूरदर्शन का क्षेत्र बहुत व्यापक है। अलग-अलग वर्गों के लिए अलग-अलग कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। कुछ कार्यक्रम ऐसे भी हैं जो विशिष्ट तथा शिक्षित वर्गों के लिए हैं। इनमें उसी के अनुरूप साहित्यिक अथवा स्तरीय भाषा का प्रयोग किया जा सकता है। संगीत के पाठ के प्रसारण में संगीत से संबंधित शब्दावली का प्रयोग किया जाएगा, जिसे सामान्य श्रोता नहीं समझ सकता। इसी प्रकार किसी साहित्यकार की साहित्यिक उपलब्धियों के बारे में प्रसारित वार्ता यदि उच्च स्तर की

भाषा में पढ़ी जाती है तो कोई दोष नहीं। टैक्नालॉजी, विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरी, एकाउंटैंसी आदि अनेक विशिष्ट विषय हैं, जिनकी चर्चा करते समय संबंधित विषय में सीमित रूप से प्रयोग होने वाले शब्द अथवा वाक्य का प्रयोग करना आवश्यक होता है।

38.5 समाचार-वाचन

रेडियो और दूरदर्शन के समाचारों को श्रोताओं तथा दर्शकों तक पहुँचाने में एक और सूत्र की भूमिका रहती है और वह है समाचार वाचन। समाचार लेखन और संपादन कितना ही सटीक, उत्तम और रोचक क्यों न हो यदि उनका वाचन ठीक तरह से नहीं किया जाएगा तो उनका पूरा असर नहीं होगा। बल्कि कई बार तो समाचार वाचक बेजान समाचार बुलेटिन में भी अपनी आवाज़ तथा कौशल से जान डाल देते हैं। वाचन का अर्थ है, जिसमें साफ, लयपूर्ण और सधे हुए स्वर, शुद्ध उच्चारण, भाषा का ज्ञान तथा समाचार पढ़ने की विशिष्ट शैली की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि प्रसारण माध्यमों में संपादकों की भूमिका गौण मानी जाती है और श्रोता और दर्शक समाचार वाचकों को ही वास्तविक समाचार प्रसारक मान बैठते हैं। जिस प्रकार फिल्मों में निर्देशक, लेखक, संगीतकार, फोटोग्राफर आदि को लोग कम जानते हैं और फिल्म के हीरो और हीरोइन ही प्रसिद्ध होते हैं, उसी तरह प्रसारण माध्यमों, रेडियो और दूरदर्शन में संपादक, प्रस्तुतकर्ता, कैमरामैन आदि अज्ञात और अदृश्य रहते हैं और समाचारवाचक श्रोताओं तथा दर्शकों के बीच मान-सम्मान पाते हैं, इसलिए इनकी ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है।

रेडियो में समाचार वाचक को समाचार का पूरा प्रभाव केवल अपनी आवाज़ के ज़रिए श्रोताओं तक पहुँचाना होता है। वाचक को समाचार के हाव-भाव के मुताबिक अपनी आवाज में उतार-चढ़ाव लाना पड़ता है। वीरता और साहस की घटनाओं और खेलों के समाचार पढ़ने की शैली तथा मृत्यु या धार्मिक समाचार पढ़ने की शैली एक-सी नहीं हो सकती। पूरी तरह एकाग्रचित्त होकर समाचार पढ़ना ज़रूरी है क्योंकि ध्यान इधर-उधर बँट जाने से कोई शब्द या वाक्यांश छूट सकता है या वाणी लड़खड़ा सकती है। रेडियो समाचार वाचक की कुशलता इसी में है कि वह अदृश्य रहकर भी श्रोताओं को दृश्य व्यक्ति की भाँति बाँधे रखे। समाचार वाचक को स्टूडियो में आने से पहले सभी समाचारों का अच्छी तरह अभ्यास करना चाहिए और नए-नए शब्दों, नामों, स्थानों आदि के सही उच्चारण का पता लगाना चाहिए। अच्छे वाचन के लिए समाचारों की अच्छी भाषा काफी हद तक ज़िम्मेदार होती है। यदि समाचारों की भाषा सुबोध व सरल होगी, वाक्य जटिल न होकर सरल व छोटे होंगे तथा क्लिष्ट शब्दों की बजाय आसानी से बोले जा सकने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाएगा तो समाचार वाचन भी मधुर और प्रभावशाली बन पड़ेगा। वास्तव में समाचार लेखन, संपादन और वाचन एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।

दूरदर्शन समाचार के वाचकों का काम रेडियो समाचार वाचकों के मुकाबले कुछ अर्थों में सरल होता है तो कुछ अर्थों में कठिन भी है। दूरदर्शन के समाचार वाचक को दर्शक प्रत्यक्षतः देखते हैं, इसलिए उसे अपने दर्शकों से तालमेल बिठाने में सुविधा होती है। जो काम रेडियो वाचक को केवल ध्वनि के माध्यम से करना होता है। उसे दूरदर्शन का

वाचक ध्वनि के साथ-साथ हाव-भाव से भी करता है। परंतु चूँकि वह दर्शकों के सामने रहता है, इसलिए उसे अधिक आत्मविश्वास तथा दृढ़ता से काम लेना पड़ता है। इसके अलावा दूरदर्शन समाचार वाचक को रेडियो वाचक के गुणों के साथ-साथ रूप-रंग में अच्छा होना चाहिए और फ्लैश लाईट की गर्मी और चमक झेलने की क्षमता उसमें होनी चाहिए। उसे अपनी वेश-भूषा तथा मेकअप पर भी ध्यान देना होता है।

दूरदर्शन समाचार वाचक का कार्य इस दृष्टि से भी जटिल है कि उसे लगातार समाचार पढ़ते नहीं जाना होता। उसे दृश्य या चित्र के अनुसार खबर पढ़नी होती है और बराबर यह ध्यान रखना होता है कि कहाँ और कब उसे रुकना है और कब फिर पढ़ना शुरू करना है। समाचार वाचक का दायित्व सचमुच बहुत बड़ा है, क्योंकि एक साथ लाखों, करोड़ों श्रोता/दर्शक उसकी आवाज सुन रहे होते हैं और उसकी गलती इन लोगों को दुखी कर सकती है। गलती हो जाने पर उसमें तुरंत क्षमा-याचना करने के साथ ही बुलेटिन को सुचारु रुप से पढ़ने की क्षमता होनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न 38.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. छोटे-छोटे वाक्यों के प्रयोग से भाषा

   (क) उलझ जाती है, (ग) सरल हो जाती है,

   (ख) जटिल हो जाती है, (घ) गूढ़ हो जाती है।

2. समाचार वाचक को ध्यान नहीं रखना चाहिए :

   (क) श्रोताओं का, (ग) सीमित समय का।

   (ख) आरोह-अवरोह, (घ) आने-जाने वालों का।

3. रेडियो समाचार वाचक के कोई दो गुण लिखिए।

38.6 अनुवाद की छाया

कई बार अंग्रेज़ी शब्दों के दुरूह अनुवाद से हमारी भाषा बोझिल बन जाती है तो कभी-कभी अंग्रेज़ी शब्दों के अंधाधुंध प्रयोग के कारण अपनी भाषा को पहचानना तक मुश्किल हो जाता है। आकाशवाणी के प्रसारणों में टेलीफोन, इंजीनियर, डाक्टर, मशीन, कंप्यूटर, रेलवे स्टेशन, एजेंसी, टीम, स्टांप, क्रीज, मैच, गोल, कंपनी, टैक्नालोजी, कार्टूनिस्ट, कांस्टेबल, फेलो, फोटोग्राफर, बजट, कर्फ्यू आदि अनेक शब्द प्रयोग किए जाते हैं, जो बोलचाल में हिंदी के अपने शब्द बन चुके हैं। दूसरी ओर ऐसे शब्द हैं, जो अंग्रेज़ी तथा हिंदी शब्दों को मिलाकर बने हैं। न वे पूरी तरह अंग्रेज़ी शब्द हैं और न ही संस्कृत के आधार पर उन की रचना की गई है। ये शब्द हैं, रेलगाड़ी, टेलीफोन केंद्र, बस अड्डा, डाक टिकट आदि।

भाषा के प्रचलित रूप के प्रयोग पर बल देने का ही परिणाम है कि आकाशवाणी में एक ही अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों पर्याय खुलकर प्रयोग होते हैं। यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि एक ही कार्यक्रम में किसी शब्द का बार-बार प्रयोग करना रोचकता में बाधक होता है। इसलिए किसी अर्थ में एक बार हिंदी शब्द और दूसरी बार उसका प्रचलित अंग्रेज़ी पर्याय प्रयोग कर लिया जाता है। उदाहरण के लिए थाना और पुलिस स्टेशन, स्कूल तथा विद्यालय, कालेज और महाविद्यालय, प्रेस और समाचारपत्र, बिल और विधेयक, समिति और कमेटी, ग्रुप और समूह, इकाई और यूनिट आदि बेझिझक प्रयोग किए जाते हैं। किंतु इसका मतलब यह नहीं कि विश्वविद्यालय के स्थान पर यूनिवर्सिटी, कर्मचारी के लिए एंप्लॉई, सदस्य के लिए मेंबर, अस्वीकार की बजाय रिजेक्ट, खिलाड़ी की जगह प्लेयर या पुलिस चौकी के स्थान पर पुलिस आउटपोस्ट शब्द भी इस्तेमाल किए जाएँ। नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्योंकि ये शब्द आम आदमी के गले से नहीं उतरते, जबकि पहले बताए गए शब्द सामान्य हिंदी भाषी व्यक्ति के गले का हार बन चुके हैं। समस्या तब आती है जब किसी ऐसे अंग्रेज़ी शब्द का प्रयोग करना हो, जिसका अपनी भाषा में कोई पर्याय प्रचलित ही न हो। ऐसे में उस शब्द की संक्षिप्त व्याख्या सहित मूल शब्द भी साथ में बोलना चाहिए ताकि श्रोता अर्थ भी समझ लें और शब्द से भी परिचित हो जाएँ। जैसे दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका जन संगठन 'स्वापो' (SWAPO) या दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन 'सार्क' (SAARC)। अब 'दक्षेस' का प्रचलन भी हो गया है।

इसी प्रकार हिंदी तथा भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता के साथ एक अनिवार्य समस्या यह है, कि बहुत से समाचारों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद किया जाता है।

हमारे देश में विभिन्न क्षेत्रों में अधिकांश काम अंग्रेज़ी में हो रहा है, अतः विविध क्षेत्रों, विभागों, संस्थाओं आदि के समाचारों की मूल सामग्री अंग्रेज़ी में ही तैयार की जाती है। इसलिए समाचारपत्रों की भाषा कभी-कभी कृत्रिम भी लगती है। किंतु यदि कुछ मूलभूत बातों के मामले में सावधानी बरती जाए तो अनुवाद की इस छाया से काफी हद तक बचा जा सकता है। उदाहरण के लिए *"The awards were given away by the Principal."* वाक्य का शाब्दिक अनुवाद होगा *''पुरस्कार प्राचार्य द्वारा दिए गए।''* यह वाक्य सही होते हुए भी हिंदी की अपनी प्रकृति से मेल नहीं खाता। हिंदी कर्तृप्रधान भाषा है, अर्थात हमारे वाक्यों में कर्ता को प्रमुखता दी जाती है जबकि अंग्रेजी कर्मप्रधान भाषा है। उसके वाक्यों में कर्म को प्रधानता मिलती है। इसलिए हमें 'द्वारा' जैसे शब्द प्रयोगों का मोह छोड़ते हुए अपनी भाषा के स्वभाव के अनुसार उपरोक्त वाक्य का अनुवाद यों करना होगा– *''प्राचार्य महोदय ने पुरस्कार दिए।''*

अंग्रेज़ी में जटिल वाक्य बनाने की परंपरा है। उदाहरण के लिए "The Police, who was present in the Function, immediately controlled the mob which tries to disturb the meeting." वाक्य लें।

यदि हम इस जटिल वाक्य का अनुवाद इसी तरह कर देंगे तो हमारे पाठकों को इसका असली मतलब समझने के लिए इसे तीन बार पढ़ना होगा। हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि वाक्य को पढ़कर उसका अर्थ समझकर उसे अपने शब्दों में छोटे सरल

वाक्यों में लिखें। इसे हम यदि एक वाक्य में लिखना चाहें तो यों लिख सकते हैं, *''समारोह में मौजूद पुलिस ने सभा में गड़बड़ पैदा करने पर उतारू भीड़ पर तत्काल काबू पा लिया।'' इसे मिश्रित वाक्य में भी लिखा जा सकता है, '' भीड़ ने सभा में गड़बड़ करने की कोशिश की, लेकिन वहाँ मौजूद पुलिस ने तत्काल उस पर काबू पा लिया।''*

अतः निष्कर्ष निकलता है कि

- जटिल वाक्यों को समझने लायक रूप में पेश करने के लिए छोटे-छोटे दो या उससे अधिक वाक्य भी बनाए जा सकते हैं।
- शब्दों का, विशेषकर पारिभाषिक शब्दों का, अनुवाद भी अक्सर करना पड़ता है। इसमें अनुवाद में समरूपता बनाए रखना बहुत ज़रूरी है। किसी पारिभाषिक शब्द का जो हिंदी रूप प्रचलित हो गया है, उसका वही रूप सब जगह इस्तेमाल किया जाए तो ठीक रहता है। जैसे–''नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग'' को कहीं ''राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान'' और कहीं ''राष्ट्रीय खुला विद्यालयी शिक्षा संस्थान'' लिखा जाए तो भ्रम पैदा हो सकता है। अतः एक मानक रूप सुनिश्चित करना आवश्यक है।

यह ठीक है कि अख़बारों का उद्देश्य भाषा का स्वरूप विकसित करना नहीं है, किंतु उसके रूप को बिगाड़ने का भी उन्हें कोई अधिकार नहीं है। कई बार एक अंग्रेज़ी शब्द का दिल्ली के अख़बारों में कोई और पर्याय इस्तेमाल किया जाता है और राजस्थान या मध्यप्रदेश के समाचारपत्रों में भिन्न शब्द प्रयोग किए जाते हैं। सामान्य शब्दों के तो जितने अधिक पर्याय होंगे, उतना ही अधिक प्रभाव पड़ता है, परंतु पारिभाषिक व तकनीकी शब्दावली में एकरूपता और समरूपता आवश्यक है। उदाहरण के लिए 'यूनिवर्स' शब्द के लिए आप ब्रह्मांड, संसार, विश्व, दुनिया कोई भी पर्याय लिख सकते हैं, किंतु जब 'यूनिवर्सिटी' का अनुवाद करेंगे तो उसके लिए 'विश्वविद्यालय' ही लिखा जाना चाहिए।

शब्दों का अनुवाद करते समय संदर्भ का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी संदर्भ बदलते ही शब्द का अर्थ एकदम बदल जाता है। 'Address' शब्द के दो अर्थ हैं–एक है 'भाषण' तथा दूसरा है 'पता'। आपको यह देखना होगा कि किस संदर्भ में उसका 'पता' पर्याय लिखना है और किस संदर्भ में 'भाषण'। इसी प्रकार 'House' का अर्थ है 'घर' और 'सदन'। एक वाक्य है *"The President announced this in his address to the House"*. दूसरा वाक्य है *"Please give your House Address"*. इन दोनों वाक्यों में 'House' तथा 'Address' शब्द आए हैं परंतु इनके अर्थ एकदम अलग हैं। पहले वाक्य में इनका अर्थ 'सदन' और 'भाषण' है तो दूसरे वाक्य में 'घर' और 'पता' है।

पाठगत प्रश्न 38.4

निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही कथन पर (√) तथा ग़लत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए :

1. शब्दशः अनुवाद के कारण भाषा कृत्रिम लगती है। ( )
2. अंग्रेज़ी कर्म प्रधान भाषा है जबकि हिंदी कर्तृप्रधान । ( )
3. अनुवाद में शब्द पर नहीं अर्थ पर ध्यान दिया जाना चाहिए। ( )
4. विदेशी शब्दों का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए। ( )

38.7 आपने क्या सीखा

1. भाषा संचार माध्यमों का प्राण है।
2. समाचारपत्रों की भाषा रेडियो और दूरदर्शन की भाषा से भिन्न होती है।
3. समाचारपत्रों की भाषा में शब्द और वाक्य रचना सरल और सीधी होती है, जिससे वह उस जन-समूह तक पहुँच सके, जहाँ कम पढ़े-लिखे मजदूर और विश्वविद्यालय के शिक्षक तथा विद्वान रहते हैं।
4. रेडियो और दूरदर्शन की भाषा आम बोलचाल की भाषा होती है, जिसे अनपढ़, साक्षर और पढ़े-लिखे विद्वान व्यक्ति भी सुनते और देखते हैं।
5. संचार माध्यमों में जटिल और बोझिल भाषा के प्रयोग से बचा जाता है।
6. दूरदर्शन में भाषा प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता है, क्योंकि उसमें चित्रों और दृश्यों का प्रयोग अधिक किया जाता है।
7. अनुवाद से संचार माध्यमों की भाषा दुरूह और बोझिल हो जाती है। इससे बचने के लिए लक्ष्य भाषा में उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो सरलता से खप जाएँ और भाषा में रवानी पैदा करें।
8. समाचारवाचक में मधुर आवाज़, प्रभावी वाचन, और समाचार संपादन का गुण होना आवश्यक है। लाखों-करोड़ों श्रोताओं और दर्शकों तक अपनी बात को सही-सही अर्थों में पहुँचाना समाचार वाचक का बहुत बड़ा दायित्व है।

38.8 योग्यता विस्तार

1. हिंदी के प्रचलित समाचारपत्रों को पढ़िए और उसकी भाषा का मिलान अपनी इस पुस्तक की भाषा से कीजिए।
2. इस पुस्तक में पीछे दी गई पारिभाषिक शब्दावली को पढ़िए और समाचारपत्रों में उनके प्रयोग पर ध्यान दीजिए।
3. आकाशवाणी से धीमी गति से प्रसारित समाचारों को सुनिए और साथ-साथ लिखिए।
4. दूरदर्शन का राष्ट्रीय प्रसारण, आज तक, एनडीटीवी इंडिया, टोटल टी.वी. आदि से प्रसारित समाचारों को सुनिए और भाषा में अंतर नोट कीजिए।

38.9 पाठांत प्रश्न

1. संचार माध्यमों में प्रयुक्त भाषा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
2. ''समाचारपत्रों में प्रयोग की जाने वाली वर्तनी में एकरूपता होनी चाहिए'' से क्या तात्पर्य है? इसे किस प्रकार सुरक्षित रखा जा सकता है?
3. रेडियो और दूरदर्शन की भाषा में क्या अंतर होता है, स्पष्ट कीजिए।
4. संचार माध्यमों में अनुवाद की आवश्यकता क्यों पड़ती है तथा उसका भाषा पर क्या प्रभाव पड़ता है?
5. अनुवाद में संदर्भ का क्या महत्त्व है? उदाहरण दे कर सुस्पष्ट कीजिए।
6. हिंदी अखबारों और इलैक्ट्रानिक समाचार माध्यमों में भाषा और वर्तनी संबंधी एकरूपता का अभाव देखने को मिलता है। शब्दों के उच्चारण में भी असमानताएँ हैं। इस विषय में एक आलेख तैयार करें।
7. क्या प्रसारण माध्यमों की प्रवृत्ति और स्वरूप से संचार माध्यमों की भाषा का स्वरूप बदला है। सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।

38.10 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

38.1 1. (क) निर्जीव (ख) अंतर (ग) अधिक, विकास (घ) भिन्न

2. रेडियो या दूरदर्शन में प्रयुक्त भाषा, लिखित रूप में

38.2 1. सरलता 2. गुण, अवगुण 3. सीखने 4. अभाव, माध्यम 5. वर्तनी

38.3 1. (ग) 2. (घ)

3. स्पष्ट और प्रभावी आवाज़, समाचार के हाव-भाव के अनुसार लय पूर्ण स्वर

38.4 1. (√) 2. (√) 3. (√) 4. (×)